तीसरी दुनिया की परतें खोलती कहानियाँ: *तीसरी ताली*

डॉ. आरिफ शौकत महात।
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (स्वायत्त)

सारांश: हमारे आसपास साँस लेती हिजड़ों की तीसरी योनि भरी पूरी दुनिया है। जिनकी अपनी संस्कृति है। मान्यताएँ हैं। रीत-रिवाज हैं। इनको हम जानते तो हैं पर समझते कम ही हैं। इन लोगों की जीवन की परतों को खोलकर इनके अस्तित्व की पूरी झांकी अपने उपन्यास "तीसरी ताली" के माध्यम से प्रदीप सौरभ हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं। सुधीर पचौरी जी के शब्दों में कहे तो यह उपन्यास "उभयलिंगी सामाजिक दुनिया के बीच और बरक्स हिजड़ों, लौंडों, लौंडेबाजों, लेस्बियनों और विकृत प्रकृति की ऐसी दुनिया हैं जो हर शहर में मौजूद है है और समाज के हाशिए पर जिंदगी जीती रहती है। अलीगढ़ से लेकर आरा, बलिया, छपरा, देवरिया यानी एबीसीडी तक, दिल्ली से लेकर पूरे भारत में फैली यह दुनिया समांतर जीवन जीती है। प्रदीप सौरभ ने इस दुनिया के उस तहखाने में झाँका है, जिसका अस्तित्व सब "मानते" तो हैं लेकिन "जानते" नहीं।"

उपन्यास में एक साथ कई कहानियाँ साँस ले रही हैं। हर कहानी के केंद्र में तीसरा योनी है। उपन्यास में चल रही गौतम, आनंदी, डिंपल, विनीता, मंजू, राजा, ज्योति, शोभा, सोनिया आदि की कहानियों के माध्यम से तीसरी दुनिया की परतों को खोलने का प्रयास किया गया है। उपन्यास में प्रवाहित हर कहानी नदियों के भाँति है, जिनका अपना एक अलग अस्तित्व है। उपन्यास में प्रवाहित ये कहानियाँ अपने अस्तित्व की धारा में बहते हुए अंत में दिल्ली नामक समुंदर में समाहित होती हैं फिर उसका विशाल रूप हमें उपन्यास में उद्घाटित होते नजर आता है।)

बीज शब्द: तृतीय पंथी, हिजड़ा, दुनिया, किन्नर, लौंडेबाज

प्रस्तावना: साहित्य समाज का दर्पण है। इससे समाज का कोई भी पहलु छुपा हुआ नहीं है। मानव समाज के दो स्तंभों- स्त्री-पुरुष लिंग के बारे में तो सभी जानते हैं लेकिन एक तीसरा लिंग भी है जिसे हाशिए पर डाल दिया गया है।

जिसके बारे में कोई भी बात नहीं करता। जिसका होना भी गुनाह मना जाता है। जिसे हिजड़ा, किन्नर,जोक्ता आदि नामों से पहचाना जाता है। मानव समाज के इस अनचाहे पहलु को भी साहित्य में स्थान दिया गया है। महाभारत काव्य में शिखण्डी का चित्रण मिलता है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में किन्नरों का उल्लेख किया गया है। राजाओं के महल में रानियों के अंतःपुर में किन्नरों की उपस्थिति इतिहास में दर्ज मिलती है। हिंदी साहित्य में पाण्डेय बेचैन शर्मा 'उग्र' के कथा साहित्य में वैश्या व्यव्साय के अंतर्गत लौंडेबाजों का अप्राकृतिक यौन संबंध को दर्शाया गया है लेकिन उनके जीवन का प्रामाणिक चित्रण उनके साहित्य में भी देखने नहीं मिलता। फ्रांस के लेखक डोमनिक लापिएर ने अपने उपन्यास "द सिटी ऑफ जॉय" में हिजडों के जीवन को कुछ हद तक छुआ है लेकिन वो भी उनके जीवन को विस्तार से प्रस्तुत कर न सके। कहने का तात्पर्य यही है कि तीसरी योनि के जीवन का साहित्य में उल्लेख मिलता है।

भारत सरकार की सन 2011 की जनगणना के अनुसार संपूर्ण भारत में लगभग लाख किन्नर हैं जिनमें से 1 लाख 34 हजार उत्तर प्रदेश में है। जनगणना के अनुसार सामान्य लोगों में शिक्षित लोगों की संख्या 74% है तो यही संख्या किन्नरों में 46% है। इससे इस समाज की सामाजिक स्वीकृति की दशा स्पष्ट हो जाता है। किन्नर समाज ने अपने अधिकारों की माँग के लिए एवं अपने आप को समाज की मुख्य धारा में लाने के लिए संघर्ष करना पड़ा है। "15 अप्रैल 2014 को भारत के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति एस. राधाकृष्णन और ए. के. सीकरी ने तृतीय लिंग को मान्यता देते हुए ऐतिहासिक फैसला किया। उसके पश्चात केंद्रीय कैबिनेट ने संसद में ट्रांसजेंडर पर्सनल बिल 2016 को मंजूरी दे दी वर्तमान में सरकार के नारों के सामाजिक आर्थिक और शैक्षणिक सत्र सशक्तिकरण के लिए तंत्र विकसित कर रही ह।" [1] इस कार्य से तृतीय लिंगी समाज को कानूनी जीने का आधार तो प्राप्त हुआ लेकिन आज भी यह वर्ग सामाजिक उपेक्षाओं को सहने के लिए मजबूर है। वर्तमान दौर में किन्नर विमर्श पर साहित्यिक चर्चाएं हो रही हैं। इस उपेक्षित समाज की अंतरंग पहलुओं को साहित्य के माध्यम से जनमानस के सामने लाया जा रहा है।

तीसरी दुनिया की परतें खोलती कहानियाँ: हमारे आसपास साँस लेती हिजड़ों की तीसरी योनि भरी पूरी दुनिया है। जिनकी अपनी संस्कृति है। मान्यताएँ हैं। रीत-रिवाज हैं। इनको हम जानते तो हैं पर समझते कम ही हैं। इन लोगों की जीवन की परतों को खोलकर इनके अस्तित्व की पूरी झांकी अपने उपन्यास "तीसरी ताली" के माध्यम से प्रदीप सौरभ हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं। सुधीर पचौरी जी के शब्दों में कहे तो यह उपन्यास "उभयलिंगी सामाजिक दुनिया के बीच और बरक्स हिजड़ों, लौंडों, लौंडेबाजों, लेस्बियनों और विकृत प्रकृति की ऐसी दुनिया हैं जो हर शहर में मौजूद है और समाज के हाशिए पर जिंदगी जीती रहती है। अलीगढ़ से लेकर आरा, बलिया, छपरा, देवरिया यानी एबीसीडी तक, दिल्ली से लेकर पूरे भारत में फैली यह दुनिया समांतर जीवन जीती है। प्रदीप सौरभ ने इस दुनिया के उस तहखाने में झाँका है, जिसका अस्तित्व सब "मानते" तो हैं लेकिन "जानते" नहीं।" [2]

उपन्यास में एक साथ कई कहानियाँ साँस ले रही हैं। हर कहानी के केंद्र में तीसरा योनी है। उपन्यास में चल रही गौतम, आनंदी, डिंपल, विनीता, मंजू, राजा, ज्योति, शोभा, सोनिया आदि की कहानियों के माध्यम से तीसरी दुनिया की परतों को खोलने का प्रयास किया गया है। उपन्यास में प्रवाहित हर कहानी नदियों के भाँति है, जिनका अपना एक अलग अस्तित्व है। उपन्यास में प्रवाहित ये कहानियाँ अपने अस्तित्व की धारा में बहते हुए अंत में दिल्ली नामक समुंदर में समाहित होती हैं फिर उसका विशाल रूप हमें उपन्यास में उद्घाटित होते नजर आता है।

उपन्यास का शुरुआती प्रसंग से ही तृतीय पंथी का घर में पैदा होने के बाद घरवालों की मानसिकता में आता परिवर्तन गौतम साहब के माध्यम से दिखाकर लेखक ने हमारे समाज में पनपती तीसरे योनि के प्रति संवेदनहीनता को स्पष्ट किया है। बेटा पैदा होने के बाद भी गौतम साहब के चेहरे पर खुशी नहीं है। वह शगुन माँगने आए हिजड़ों को शगुन नहीं देते। दरवाजा तक नहीं खोलते। लोगों से नजरें मिलाने से कतराते हैं। उनके व्यवहार से लगता है कि उनके ऊपर दुखों का पहाड़ गिर पड़ा है। "असल में गौतम साहब के घर बेटा जरूर हुआ था, लेकिन कुछ दिनों के अंदर ही परिवार को पता चल गया था कि

वह किसी काम का नहीं है। बढ़ने के साथ उसका पुरुषांग विकसित नहीं हुआ। डॉक्टरों के चक्कर लगाए। सबने एक ही जवाब दिया, बच्चे में स्त्री और पुरुष दोनों के लक्षण हैं। माँ के पेट में ग्यारहवें सप्ताह सेक्सुअल आर्गन को विकसित करने वाले हारमोन्स अपनी भूमिका पूरी नहीं कर पाये।" [3] हिजड़े के पैदा होते ही घर का वातावरण एकदम बदल जाता है। पूरे घर में मातम छाया रहता है। बच्चे को कूड़ादान में फेंक दिया जाता है। इसके पीछे कहीं ना कहीं समाज में पनपती इनके प्रति अस्वीकृति की भावना काम करती है। यहाँ तक की घर वाले चाहते हुए भी इन्हें अपने साथ नहीं रख पाते। उपन्यास की एक पात्र आनंदी को लड़की होती है। आनंदी की बेटी निकिता हिजड़ा है फिर भी वह समाज की परवाह किए बिना उसे अपने घर में रखती है। समाज के ताने सुनकर भी उसे बड़ा करती है। पढ़ाती है लेकिन उसे परेशानी तब महसूस होती है जब वह हाई स्कूल पहुँचती है। बढ़ती उम्र के साथ लक्षण स्पष्ट होने लगते हैं। पुरुष और स्त्री जेंडर में ना बैठ पाने के कारण उसे स्कूल से निकाल दिया जाता है। वह जैसे तैसे उसे घर में पढ़ाती है। आखिर में वह समाज, कॉलेनी यहाँ तक की रिश्तेदारों के तानों से और उनके द्वारा होते मजाक से उक्ता कर न चाहते हुए अपनी बेटी को हिजड़ा समाज को देती है। समाज के द्वारा अस्वीकृति इनके दुर्गति का सबसे बड़ा कारण है। "ये दुनिया ऐसे बच्चों को स्वीकार नहीं करती। मंद बुद्धि और विकलांग बच्चों को तो समाज बर्दाश्त कर लेता है लेकिन हिजड़ों को नहीं।"[4] प्रदीप सौरभ जी ने उपन्यास में बहुत से उदाहरणों के माध्यम से इस बात की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है।

परिवार, समाज, शैक्षणिक संस्थान, सांस्कृतिक समारोह मनुष्य के व्यक्तित्व के निर्माण में अहम भूमिका निभाते हैं। इन्हीं जगहों पर किसी को अपमानित किया जाता है तो उसका असर उसके पूरे व्यक्तित्व पर पड़ता है। तृतीय पंथी लोग जन्म से लेकर मृत्यु तक इन जगहों पर अक्सर अपमानित होते रहते हैं।

तीसरी दुनिया का एक रंग लौंडेबाजों का है। दलित युवक ज्योति की लड़के से लौंडे और लौंडे से हिजड़े बनने की कहानी के माध्यम से लेखक ने आजीविका के प्रश्न की गहनता से हमें रूबरू कराने का प्रयास किया है। बाबू

श्यामसुंदर सिंह अपने इलाके के दबंग जमीदार थे। लौंडेबाज थे। ज्योति नाम के लौंडे को वो पाले हुए थे। उत्तर प्रदेश और बिहार के सीमा पर स्थित आरा, बलिया, छपरा और देवरिया जिले (ए बी सी डी जिले) में लौंडों को पालना नवाबी शौक माना जाता है। ज्योति जब तक श्यामसुंदर के छत्रछाया में था तबतक उसका और उसके घर वालों का गुजारा आराम से हो रहा था। बाबू साहब के लिए जब वह काम का न रहा उसका गुजारा मुश्किल होने लगा। बाबू साहब के आखरी वक़्त में दिए हुए पैसों से वह अपने उदरनिर्वाह के लिए चाय की दुकान शुरू करता है, लेकिन लौंडे के दुकान में चाय पीने कोई नहीं आता। "लौंडे पर सवारी तो की जा सकती है, लेकिन उसके हाथ का खाना-पीना सभ्य लोगों के लिए हराम था।" [5] हर किस्म के प्रयास कर अंत में भूख के आगे हार कर ज्योति अक्सर शौकीन लोगों के साथ आने जाने लगा। हमारे यहाँ की ये रित है कि कोई किसी भी दलदल से निकल कर स्वाभिमान की जिंदगी जीना चाहे या वैसी कोशिश करें तो उसे प्रोत्साहन देने के बजाय उसकी पुरानी जिंदगी को लेकर उसे इतने ताने मारे जाते हैं कि वह फिर से उसी दलदल की तरफ चला जाता है। नहीं तो फिर अपनी जिंदगी खत्म करता है। ज्योति भी अपनी जिंदगी को खत्म करने के लिए बनारस पहुँचता है। मौत के इंतजार में बैठी बनारस में विधवाओं की स्थिति को देख वह वहाँ से दिल्ली सोनम के दिए हुए पते पर पहुँचता है। ज्योति के पास लौंडा होने के कारण कोई काम नहीं है और ना ही वह हिजड़ा है। अपने पेट की आग बुझाने और घरवालों की सहायता के लिए वह मर्द से हिजडा बनने के लिए तैयार हो जाता है। सोनम उसे यह करने से मना करती है लेकिन वो कहता है, "माना मैं मर्द हूँ लेकिन ये समाज मुझसे मर्द का काम लेने के लिए राजी नहीं है। मुझे इस समाज में मादा की तरह भोग की चीज में तब्दील कर दिया है। मैं मर्द रहूँ, औरत रहूँ या फिर हिजड़ा बन जाऊँ, इससे किसी को कोई फर्क नहीं पड़ेगा, पेट की आग तो बड़े-बड़ों को न जाने क्या-क्या बना देती है।" [6] प्रस्तुत उपन्यास में ज्योति जैसे न जाने कितने किरदार अपने उदरनिर्वाह के चलते वेश्या व्यवसाय की तरह अपने रुख को मोड़ देते हैं। इनमें से कुछ अपनी मर्जी से, कोई बेमन से तो कोई परिस्थिति से हार कर समझौता कर देते हैं।

बाबू श्याम सुंदर सिंग, सुविमल भाई जैसे लौंडेबाजों के शौकीन लोगों की समाज में कमी नहीं है। लेकिन इन लोगों के साथ जुड़ी हुई स्त्रियों की मानसिक दशा एवं स्थिति चिंताजनक बनी हुई नजर आती है। गांधीवादी सुविमल भाई को औरतों के गंध से नफरत थी। सामाजिक कार्यों से जुड़े हुए थे। आंदोलनकारी थे। उनके इस रूप पर रीझकर रति उनसे शादी करती है। विवाह के बाद भी वो रति से दूर रहते। कार्यकर्ता अनिल अब उनका साथी बन गया था। संगठन का सारा काम जो रति देखती थी अब वह अनिल को सौंपा गया। रति के द्वारा सुविमल को उससे कतराने और दूर रहने की वजह पूछने पर वो कहते हैं, "ऐसा नहीं है कि मुझे स्त्री-गंध और उसका संसर्ग पसंद नहीं है। मैं पुरुष-स्पर्श से अपने को पूर्ण बनाता हूँ।"[7] यह सुन रति के पैरों तले की जमीन खिसक जाती है। वह अपनी भावनाओं की बात करती है। बच्चे की बात करती है, तो सुविमल उसे अनिल से संबंध बनाने की सलाह देता है। रति इस बात को नकारती है। रति के द्वारा कही गई बातें हमारे देश में समलैंगिक शादी शुदा लोगों के जीवन की त्रासदी को व्यक्त करती हैं। "इसमें किसी औरत का क्या दोष है? वह बच्चे न जन पाये तो उसे बाँझ क्यों कहते हैं? यह लांछन औरत पर ही क्यों? समाज पुरुष को हिजड़ा क्यों नहीं कहता?" [8] रति और सुविमल की कहानी के माध्यम से लेखक ने समाज में पनपती उस कमजोरी को निर्देशित करने का प्रयास किया है जहाँ वास्तविकता जाने बगैर हम स्त्रियों को दोषी मानते हैं। सुविमल जैसे सफ़ेदपोश रति जैसी स्त्रियों का इस्तेमाल कर अपनी कमजोरियों को छुपाते हैं। साथ ही उपन्यास में यास्मिन और जुलेखा के माध्यम से ऐसी स्त्री पात्रों का चित्रण किया है जिन्हें पुरुष गंध से नफरत है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने समाज के डर से जुर्म करता मनुष्य फिर चाहे वो हिजड़ा ही क्यों न हो राजा की कहानी के द्वारा स्पष्ट किया है। राजा की रानी बनने की कहानी हमारे समाज में पनपती बीमारी की ही निशानी है। राजा कथक डांसर था लेकिन उसका स्वभाव सखी भाव वाला था। राजा अलीगढ़ से दिल्ली डिंपल की मंडली में काम की तलाश में पहूँचता है। डिंपल के डेरे में वह छोटे मोटे काम करते रहता है। मंजू जिसे डिंपल ने अपनी बेटी की तरह पाला था वो राजा पर मोहित हो जाती है। राजा में भले ही सखी भाव था

लेकिन था तो वह मर्द ही। इनके प्रेम का पता डिंपल को तब पता चलता है जब मंजू का पेट दिखने लगता है। डिंपल इस बात को सह नहीं पाती। उसे अपने समाज का डर सताने लगता है। "हिजड़ा भी कहीं गर्भ धारण कर सकता है! हिजड़े के बच्चे की बात जो भी सुनेगा, उसके पैरों तले की जमीन वैसे ही खिसक जायेगी। पूरी बिरादरी में थू-थू हो जाएगी।" [9] बिरादरी के नाराज होने से जो डेरा उसने जमाया है उसके हाथ से जाने का डर उसे सताने लगता है। मंजू का सपना घर बसाने का था। मंजू की भावनाओं को अनदेखा कर डिंपल मंजू का बच्चा गिरवाकर उसकी बच्चेदानी निकलवाती है। इस अपराध के दंड स्वरूप राजा का पुरुषांग काट उसे हिजड़ा बना दिया जाता है।

विनीत से बनी विनीता की कहानी के माध्यम से लेखक ने दिल्ली में केजी मार्ग पर चलती हिजड़ों की वेश्यावृत्ति की वास्तविकता को दर्शाने का सफल प्रयास किया है। रेखा चितकबरी अपने गैंग के माध्यम से पिंकी सुनैना, विनीता जैसे तृतीय लिंगी को लालच देकर या उनके मजबूरी का फायदा उठा कर वेश्या व्यवसाय में धकेल देती है। प्रस्तुत उपन्यास में हिजड़ों, लौंडों के माध्यम से वेश्या व्यवसाय के अर्थतंत्र को और उससे जुड़े प्रशासनिक कमजोरियों को उखाड़ने का प्रयास बखूबी किया गया है। वैश्या व्यवसाय के दलदल में फँसे विनीता जैसे बहुत कम लोग बाहर निकल कर अपनी पहचान बना दे हैं। विनीता ब्यूटीशियन का कोर्स कर अपना खुद का बिजनेस चलाती है। बैंगलोर से कॉस्मेटिक प्लास्टिक सर्जरी कराकर खुद को पूरी तरह से औरत बना देती है। आगे जाकर अपने आप को और तृतीय लिंगी समाज को रियालटी शो- "द छक्का" के माध्यम से पहचान दिलाती है। उपन्यास में विनीता की कहानी भले ही फिल्मी लगती है लेकिन उम्मीद जगा जाती है कि इंसान चाहे तो अपनी परिस्थिति में बदलाव ला सकता है।

अर्थतंत्र के चक्कर में हिजडों के गद्दियों में चलता खूनी संघर्ष के माध्यम से इस समाज में पनपती स्वार्थपरकता का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में किया गया है। डिंपल की गद्दी, बाबी फरीदाबाद की गद्दी, चंदाबाई की गद्दी के माध्यम से हिजडों की दुनिया का ये रूप भी उजागर होता है। दिल्ली के की सबसे बड़ी गद्दी की मालकिन चंदाबाई है। इस गद्दी के पास करोड़ों की

ISSN-2581-8848

जमीन जायदाद है। इस इलाके में रहने वाले सभी के सभी अमीर हैं। इस इलाके में रहने वाले लोगों की रोज की कमाई 30 से 40 हजार के करीब है। इनमें से कुछ हिस्सा चंदाबाई के पास आता है। चंपाबाई के इस गद्दी के नीचे तीन उप गद्दीयाँ कार्यरत हैं। जिनमें से एक गद्दी की प्रमुख नरगिस है। दूसरे गद्दी की प्रमुख नीलम है, तो तीसरी गद्दी की प्रमुख रीना है। नरगिस की नजर चंदाबाई की जगह पर है जिसके चलते गोपाल की सहायता से वह चंदाबाई ओ खत्म करवाकर गद्दी हतिया लेती है। आजकल इस केस के चलते जमानत पर है। इस गद्दी के चलते नरगिस, नीलम और रीना में संघर्ष बरकरार है। चंदाबाई के समय से ही इस गद्दी के वारिस को लेकर संघर्ष छिड़ चुका था। इस संदर्भ में गुरु आशामायी ने समझाया था, "गद्दी को लेकर झगड़ा करने से दूसरी दुनिया के लोगों पर क्या असर पड़ेगा, कभी सोचा इस बारे में? वे वही सोचेंगे कि प्रकृति के सताए हुए इस दुनिया के लोग भी दूसरी दुनिया के लोगों जैसे ही हैं। दोनों में कोई अंतर नहीं है। दोनों में हिजड़पन कूट-कूटकर भरा है। हमें तो ईश्वर ने दूसरों को अपशकुन से बचाने की ताकत दी है। हमारा काम दूसरी दुनिया के लोगों को आशीर्वाद देना है उनकी तरह लड़ना झगड़ना नहीं। हमारी मुक्ति का यही रास्ता है। इस योनि से मुक्ति के लिए हमें दूसरी दुनिया के लोगों से अलग दिखना चाहिए।" [10] लेकिन इनमें पनपता लालच गद्दी को खूनी संघर्ष की तरफ ले जाता है। नरगिस चंदाबाई की हत्या जिस गोपाल से करवाती है वही इसी गद्दी के लालच में नरगिस की हत्या करता है और खुद गद्दी पर बैठ जाता है। गैर हिजड़े के गद्दी पर बैठने से लोग जब आवाज उठाते हैं तो इस गद्दी के लोभ में खुद हिजड़ा बन जाता है।

उपन्यास में बहुत सी जगहों पर हिजड़ों से संबंधित रीति-रिवाजों की भी चर्चा की गई है। ज्योति को हिजड़ा बनाने के लिए मुर्गे की बलि देकर मुर्गादेवी की उपासना की जाती है। इस रस्म को इन लोगों में संस्कार कहा जाता है। सुरैया के मौत के समय इनमें मौत के संदर्भ में प्रचलित मिथ की चर्चा की गई है। "दिल्ली में आमतौर पर हिजड़े के शव को रात को डंडे से मारते हैं, उस पर चप्पल जूते बरसाते और सड़क पर खींचते हुए स्मशान घाट ले जाते हैं। इस तरह शव को स्मशान में ले जाने के पीछे मान्यता यह है कि

मारनेवाला दोबारा तीसरी योनि में जन्म नहीं लेता।"[11] उपन्यास में हिजडों के पवित्र तीर्थस्थल कुवागम मेले की में प्रचलित मंगलसूत्र तोड़ने की प्रथा को दिखाया गया है। साथ ही इस प्रथा से संबंधित महाभारत की कथा का वर्णन करते हुए अरवाण और कृष्ण की मोहिनी अवतार की कहानी से इस प्रथा के सन्दर्भ को दर्शाया है। कुवागम का यह मेला सत्रह दिन चलता है जहाँ देश भर से हिजड़े आते हैं।

कमोबेश उपन्यास की हर कहानी तृतीय लिंगी लोगों के जीवन के अंतरंग को खोलने का प्रयास करती है। साथ ही हिजड़ों, लौंडो, लौंडेबाजों, लेस्बियन्स के जीवन की मानसिक, शारीरिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का वास्तविक अंकन करती है। इस समाज के बेहतरी के लिए हम सब को उन्हें कानूनी प्राप्त अधिकार का सम्मान कर उन्हें सामाजिक स्वीकृति देनी होगी। तभी इनमें से ज्यादातर लोग जो समाज के डर से उपेक्षित जीवन जी रहे हैं वो मुख्य प्रवाह में आएँगे।

संदर्भ ग्रंथ-

1. पंजाब स्क्रीन INDIA मानवाधिकार विमर्श में कहां खोजती है तीसरे लिंग की आवाज.htm
2. प्रदीप सौरभ- तीसरी ताली, किताब के फ़्लैश बैक से, प्रथम सं. 2011, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. वही, पृष्ठ क्र. 41
4. वही, पृष्ठ क्र. 81
5. वही, पृष्ठ क्र. 55
6. वही, पृष्ठ क्र. 57
7. वही, पृष्ठ क्र. 70
8. वही, पृष्ठ क्र. 71
9. वही, पृष्ठ क्र. 29-30
10. वही, पृष्ठ क्र. 104
11. वही, पृष्ठ क्र. 147